



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....भूमिका भरने.....

दिनांक ।.....५.२०२१.....पृष्ठ संख्या.....२.....कॉलम.....३-६.....

वीसी ने कहा-एचएयू अब ग्राफटिड तकनीक से तैयार पौधे किसानों को करवाएगा उपलब्ध

वैजीटेबल ग्राफटिंग यूनिट की रखी आधारशिला, मृदा जनित बीमारियों से मिलेगी राहत

भारत न्यूज़ | हिसार

एचएयू अब जल्द ही किसानों को सब्जियों की ग्राफटिड तकनीक से तैयार पौधे उपलब्ध करवाएगा। इसके लिए विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग में विश्वविद्यालय के वीसी प्रोफेसर समर सिंह ने वैजीटेबल ग्राफटिंग यूनिट की आधारशिला रखी।

इस अवसर पर वीसी ने कहा कि इससे बिना रसायन के प्रयोग से भी मृदा जनित बीमारियों व नेमाटोड (सूत्रकृषि) की समस्या से राहत मिलेगी। उन्होंने कहा कि इस यूनिट की स्थापना 175 लाख की राशि से राष्ट्रीय कृषि विकास योजना-एप्टार परियोजना के तहत की जाएगी। जिसके बाद न केवल हरियाणा बल्कि देश में भी निकट भविष्य में ग्राफिटिंग तकनीक के अनुसंधान कार्य और व्यवसायीकरण को बढ़ावा मिलेगा। इस यूनिट के तहत ग्राफटिंग करने



वैजीटेबल ग्राफटिंग यूनिट की आधारशिला रखते प्रो. समर सिंह व अन्य।

के लिए हाइटेक ग्रीन हाउस सहित नी ढांचों का निर्माण किया जाएगा। इस तकनीक के प्रचलन के साथ ही किसानों की आय को भी बढ़ाया जा सकेगा व सब्जी उत्पादकों को भी विशेष लाभ होगा।

इस प्रोजेक्ट की परियोजना अधिकारी डॉ. इंदू अरोड़ा के अनुसार ग्राफिटिंग एक अनूठी बागवानी तकनीक है जिसका उपयोग दुनियाभर में संरक्षित खेती में निमाटोड व मिट्टी से पैदा होने वाली

बीमारियों को दूर करने के लिए या विभिन्न पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुसार पौधे की शक्ति बढ़ाने के लिए किया जाता है। वर्तमान समय में इसी महत्ता बढ़ गई क्योंकि फसल चक्र या मिट्टी के धूमन के विकल्प सीमित हैं। इस परियोजना में विभागाध्यक्ष डॉ. एके भाटिया, पर्व विभागाध्यक्ष डॉ. वीके बत्तरा और सहायक वैज्ञानिक डॉ. कुलदीप भी अनुसंधान कार्य में सहयोग कर रहे हैं। आधारशिला रखने के बाद

ये होंगे तकनीक के फायदे

सब्जी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. ए.के. भाटिया ने बताया कि सब्जियों में ग्राफिटिंग तकनीक से पौधे में रोग प्रतिरोधक क्षमता, नेमाटोड प्रतिरोधक क्षमता, उपज में वृद्धि, कम तापमान व उच्च तापमान के प्रति सहिष्णुता, उच्च नमक सहिष्णुता, बाढ़ सहिष्णुता, उत्तम पोषक तत्व का बढ़ना आदि फायदे होंगे।

विश्वविद्यालय के कुलपति व अन्य अधिकारियों ने सब्जी विज्ञान विभाग में ग्राफटिंग तकनीक से तैयार किए गए पौधों, खेत में उगाई गई ग्राफटिड सब्जियों व अनुसंधान कार्यों का भी अवलोकन किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज, अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत सहित सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक व विभागाध्यक्ष मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक संपर्क

दिनांक ।।। ।।। ।।। पृष्ठ संख्या..... ।।। कॉलम..... ।।।

हक्किं कुलपति ने वैजीटेबल ग्राफिंग यूनिट की रथ्खी आधारशिला

कहा, बिना रसायन प्रयोग के भी नेमाटोड व मृदा जनित बीमारियों से मिलेगी राहत

हिसार, 31 मार्च (सुरेंद्र सोढी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय अब जल्द ही किसानों को सब्जियों की ग्राफिंग तकनीक से तैयार पौध उपलब्ध करवाएगा। इसके लिए विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर ने वैजीटेबल ग्राफिंग यूनिट की आधारशिला रखी है। इस अवसर पर वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि इससे बिना रसायन के प्रयोग से भी मृदा जनित बीमारियों की समस्या से राहत मिलेगी। उन्होंने कहा कि इस यूनिट की स्थापना 175 लाख की राशि से राष्ट्रीय कृषि विकास योजना-रपतार परियोजना के तहत की जाएगी जिसके बाद न केवल हरियाणा बल्कि देश में भी निकट भविष्य में ग्राफिंग तकनीक के



वैजीटेबल ग्राफिंग यूनिट की आधारशिला रखते विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व अन्य। ग्राफिंग तकनीक से तैयार पौधों की जानकारी लेते कुलपति। अनुसंधान कार्य और व्यवसायीकरण को बढ़ावा मिलेगा। इस यूनिट के तहत ग्राफिंग करने के लिए हाइटेक ग्रीन हाउस सहित नौ ढाँचों का निर्माण किया जाएगा। इस तकनीक के प्रचलन के साथ ही किसानों की आय उत्पादकों को भी बढ़ाया जा सकेगा व सब्जी इस परियोजना में विभागाध्यक्ष डॉ.

ये होंगे तकनीक के फायदे

सब्जी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. ए.के. भाटिया ने बताया कि सब्जियों में ग्राफिंग तकनीक से पौधे में रोगप्रतिरोधक क्षमता, नेमाटोड प्रतिरोधक क्षमता, उपज में वृद्धि, कम तापमान व उच्च तापमान के प्रति सहिष्णुता, उच्च नमक सहिष्णुता, बाढ़ सहिष्णुता, उत्तर प्रोपक तत्व का बढ़ना, विकास की बढ़ावा देना, भारी धातु और जैविक प्रदूषक सहिष्णुता, गुणवत्ता में बदलाव, प्रदर्शनी और शिक्षा के लिए सजावटी मूल्य, विस्तारित फसल अवधि आदि के फायदे होंगे।

अनुसंधान कार्यों का भी अवलोकन किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंवोज, अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत सहित सभी महाविद्यालयों के अधिकारियों, निदेशक व विभागाध्यक्ष मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... अभ्यासालय.....

दिनांक .।: ५ :. २०२१ पृष्ठ संख्या..... ३ कॉलम..... ५ : ८



वेजिटेबिल ग्राफटिंग यूनिट की आधारशिला रखी

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) किसानों को सब्जियों की ग्राफटिड तकनीक से तैयार पौध उपलब्ध कराएगा। विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग में कुलपति प्रो. समर सिंह ने बुधवार को वेजिटेबिलग्राफटिंग यूनिट की आधारशिला रखी। ये यूनिट 1.75 करोड़ की राशि से रपतार परियोजना के तहत तैयार होगी। इस परियोजना में विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. भाटिया, पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. वी.के. बत्तरा और सहायक वैज्ञानिक डॉ. कुलदीप भी अनुसंधान कार्य में सहयोग कर रहे हैं। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज, अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत सहित सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक व विभागाध्यक्ष मौजूद रहे। ब्यूरो



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दूरीः मौज़ि.....
 दिनांक .।. ५. २०२१....पृष्ठ संख्या..... ९..... कॉलम..... ६-९.....

एचएयू किसानों को देगा ग्राफटिड सभियों की पौध : सनार सिंह

हिसार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय जल्द
किसानों को सभियों की ग्राफटिड तकनीक
से तैयार पौध उपलब्ध करवाएगा। इसके
लिए विश्वविद्यालय के सब्जी विहान विभाग
में कुलपति प्रोफेसर ने वैज्ञानिक ग्राफटिड
यूनिट की आधारशिला रखी है। वींसी समर
सिंह ने कहा कि इससे बिना रसायन के
प्रयोग से भी मृदा जिलत हीमारियों तथा
नेमाटोड (सूखकृषि) की समस्या से राहत
मिलेगी। परियोजना में विभागाध्यक्ष डॉ. एके
आटिया, पर्व विभागाध्यक्ष डॉ. वीके बतरा तथा सॉलानसियस सभियों में पूर्वसैरियम या बैक्टीरियल विल्ट की समस्या प्रसूच है।

कृषि रसायनों पर निर्भरता कम होगी

इस तकनीक के प्रयोग के साथ ही किसानों की आय को भी बढ़ाया जा सकेगा। इससे सभजी उत्पादकों को भी विशेष लाभ होगा। उच्छृंखले कहा कि वैज्ञानिकों द्वारा
प्रदेश में एक बार प्रतिरोधी रूट्स्टर्टॉक्स पहचान किए जाने के बाद इससे न केवल
कृषि रसायनों पर निर्भरता कम होगी, बल्कि इस तकनीक के साथ हमारे किसानों
की प्रमुख समस्याओं का भी समाधान होगा। इसके लिए प्रदेश में विश्वविद्यालय के
वैज्ञानिकों ने रूट्स्टर्टॉक्स की पहचान के ऊर्ध्वशयों के साथ अनुसंधान कार्य शुरू कर
दिए हैं, जिसके सकारात्मक परिणाम साक्षर आ रहे हैं। उच्छृंखले बताया कि प्रदेश में
संरक्षित खेती में निमेटोड की समस्या, लवणता की समस्या, कुकुर्विट्स और
आटिया, पर्व विभागाध्यक्ष डॉ. वीके बतरा तथा सॉलानसियस सभियों में पूर्वसैरियम या बैक्टीरियल विल्ट की समस्या प्रसूच है।
सहायक वैज्ञानिक डॉ. कुलदीप भी
अनुसंधान कार्य में सहयोग कर रहे हैं। आधारशिला रखने के बाद विक्री कुलपति तथा अन्य अधिकारियों ने सब्जी विहान
विभाग में ग्राफटिड तकनीक से तैयार किए गए पौधों, खेत में उगाई गई ग्राफटिड सभियों की अवलोकन किया। इस
अवसर पर कुलसचिव डॉ. बीआर कंबोज, अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत सभी विभागाध्यक्ष मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब कल्पना.....

दिनांक ..4..2021....पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....7.....

'सभियों की ग्राफटिड तकनीक से तैयार पौध मिलेगी किसानों को'

हिसार, 31 मार्च (पंकेस): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय अब जल्द ही किसानों को सभियों की ग्राफटिड तकनीक से तैयार पौध उपलब्ध करवाएगा। इसके लिए विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग में विश्वविद्यालय के कुलपति ने वैजीटेबल ग्राफटिंग यूनिट की आधारशिला रखी है। जात रहे कि इस यूनिट की स्थापना 175 लाख की राशि से राष्ट्रीय कृषि विकास योजना-रफतार परियोजना के तहत की जाएगी।

इस यूनिट के तहत ग्राफिटिंग करने के लिए हाइटेक ग्रीन हाऊस सहित 9 ढांचों का निर्माण किया जाएगा। सब्जी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. ए.के. भाटिया ने बताया कि सभियों में ग्राफिटिंग तकनीक से पौधे में रोगप्रतिरोधक क्षमता, नेमाटोड प्रतिरोधक क्षमता, उपज में वृद्धि, कम तापमान व उच्च तापमान के प्रति सहिष्णुता, उच्च नमक सहिष्णुता, बाढ़ सहिष्णुता, उन्नत पोषक तत्व का बढ़ना, विकास को बढ़ावा देना, भारी धातु और जैविक प्रदूषक सहिष्णुता, गुणवत्ता में बदलाव, प्रदर्शनी और शिक्षा के लिए सजावटी मूल्य, विस्तारित फसल अवधि आदि के फायदे होंगे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	01.04.2021	--	--

एचएयू अब किसानों को देगा ग्राफटिंग सज्जियों की पौध : प्रोफेसर समर सिंह

हैलो हिसार न्यूज़

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय अब जल्द ही किसानों को सज्जियों की ग्राफटिंग तकनीक से तैयार पौध उपलब्ध करवाएगा। इसके लिए विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर ने वैजीटेबल ग्राफटिंग यूनिट की आधारशिला रखी है। इस अवसर पर वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि इससे बिना रसायन के प्रयोग से भी मृदा जनित बीमारियों व नेमाटोड(सूत्रकृमि)की समस्या से राहत मिलेगी। उन्होंने कहा कि इस यूनिट की स्थापना 175 लाख की राशि से राष्ट्रीय कृषि विकास योजना-रपतार परियोजना के तहत की जाएगी जिसके बाद न



केवल हरियाणा बल्कि देश में भी निकट भविष्य में ग्राफिटिंग तकनीक के अनुसंधान कार्य और व्यवसायीकरण को बढ़ावा मिलेगा। इस यूनिट के तहत ग्राफटिंग करने के लिए हाइटेक ग्रीन हाउस सहित नौ ढांचों का निर्माण किया जाएगा। इस तकनीक के प्रचलन के साथ ही किसानों की आय को भी बढ़ाया जा सकेगा व सब्जी उत्पादकों को भी विशेष लाभ होगा। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों द्वारा प्रदेश में एक बार प्रतिरोधी रूटस्टॉक्स पहचान किए जाने के बाद इससे न केवल कृषि-रसायनों पर निर्भरता कम होगी, बल्कि इस तकनीक के साथ हमारे किसानों की प्रमुख समस्याओं का भी समाधान होगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरियाणा वाटिका	30.03.2021	--	--

एचएयू अब किसानों को देगा ग्राफटिंग सब्जियों की पौध

बिना रसायन प्रयोग के भी नेमाटोड व गुदा जनित बीमारियों से निलंबित राहत

कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने वैज्ञानिक ग्राफटिंग यूनिट की रक्षी आधारशिला



वाटिका@हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय अब जल्द ही किसानों को सब्जियों की ग्राफटिंग तकनीक से तैयार सौध उपलब्ध करवाएगा। इसके लिए विश्वविद्यालय के सज्जी विज्ञान विभाग में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर ने वैज्ञानिक ग्राफटिंग यूनिट की आधारशिला रखी है। इस अवसर पर वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि इससे विना रसायन के प्रयोग से भी मृदा जनित बीमारियों व नेमाटोड (मृत्कृमि) की समस्या से राहत मिलेगी। उन्होंने कहा कि इस यूनिट की स्थापना 175 लाख की

राशि से राष्ट्रीय कृषि विकास योजना-रसायन परियोजना के तहत की जाएगी। जिसके बाद न केवल हरियाणा बल्कि देश में भी निकट भविष्य में ग्राफटिंग तकनीक के अनुसंधान कार्य और व्यवसायीकरण को बढ़ावा दिलेगा। इस यूनिट के तहत ग्राफटिंग करने के लिए हाईटेक ग्रीन हाउस सहित नौ ढाँचों का निर्माण किया जाएगा। इन तकनीक के प्रचलन के साथ ही किसानों को आव को भी बढ़ावा जा सकेगा व सब्जी उत्पादकों को भी विशेष लाभ होगा। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों द्वारा प्रदेश में एक बार प्रतिरोधी रूट्स्टॉक्स की सब्जियों में फूसैरियम वा बैक्टीरियल

फहचान किए जाने के बाद इससे न केवल कृषि-रसायनों पर निर्भरता कम होगी, बल्कि इस तकनीक के साथ हमारे किसानों की प्रमुख समस्याओं का भी समाधान होगा। इसके लिए प्रदेश में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने रूट्स्टॉक्स की फहचान के उद्देश्यों के साथ अनुसंधान कार्य शुरू कर दिए हैं, जिसके सकारात्मक परिणाम सामने आ रहे हैं। उन्होंने बताया कि प्रदेश में संरक्षित खेती में निमेटोड की समस्या, लवणता वा बारियता की समस्या, कुलपर्टिस और सॉलानसियस सब्जियों में फूसैरियम वा बैक्टीरियल का भी अवलोकन किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	31.03.2021	--	--

एचएयू अब किसानों को देगा ग्राफटिड सब्जियों की पौध : प्रोफेसर समर सिंह

बिना रसायन प्रयोग के भी नेमाटोड व मृदा जनित बीमारियों से मिलेगी राहत



पाठकपक्ष न्यूज़

हिसार, 31 मार्च : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय अब जल्द ही किसानों को सब्जियों की ग्राफटिड तकनीक से तैयार पौध उपलब्ध कराएगा। इसके लिए विश्वविद्यालय के सब्जी विभाग में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर ने वैज्ञानिक ग्राफटिंग यूनिट की आधारशिला रखी है। इस अवसर पर वैज्ञानिकों को सबोचित करते हुए उन्होंने कहा कि इससे बिना रसायन के प्रयोग से भी मृदा जनित बीमारियों व नेमाटोड (सूत्रकमि) की समस्या से राहत मिलेगी। उन्होंने कहा कि इस यूनिट की स्थापना 175 लाख

होगी, बल्कि इस तकनीक के साथ हमारे किसानों की प्रमुख समस्याओं का भी समाधान होगा। इसके लिए प्रदेश में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने रूटटर्टेक्स की पहचान के उद्देश्यों के साथ अनुसंधान कार्य शुरू कर दिए हैं, जिसके सकारात्मक परिणाम सामने आ रहे हैं। उन्होंने बताया कि प्रदेश में संरक्षित खेती में निमेटोड की समस्या, लवणता या क्षारियत की समस्या, कुकुर्बिंट्स और सॉलानसियस की सब्जियों में घूसैरियम या बैंकटीरियल विल्ट की समस्या आदि प्रमुख हैं। इसके पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. चौ.के. बत्रा और सहायक वैज्ञानिक डॉ. कुलदीप भी अनुसंधान कार्य में सहयोग कर रहे हैं। आधारशिला रखने के बाद विश्वविद्यालय के कुलपति व अन्य अधिकारियों ने सब्जी विज्ञान विभाग में ग्राफटिंग तकनीक से तैयार किए गए पौधों, खेत में उगाई गई ग्राफटिड सब्जियों व अनुसंधान कार्यों का भी अवलोकन किया। सब्जी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. ए.के. भाटिया ने बताया कि सब्जियों में ग्राफटिंग तकनीक से पौधे में रोगप्रतिरोधक क्षमता, नेमाटोड प्रतिरोधक क्षमता, उपज में वृद्धि, कम तापमान व उच्च तापमान के प्रति सहिष्णुता, उच्च नमक सहिष्णुता, बढ़ सहिष्णुता, उत्तम पोषक तत्व का बढ़ावा, विकास को बढ़ावा देना, भारी धूत और जैविक प्रदूषक सहिष्णुता, गुणवत्ता में बदलाव, प्रदर्शनी और शिक्षा के लिए सजावटी मूल्य, विस्तारित फसल अवधि आदि के फायदे होंगे। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. चौ.आर. कंबोज, अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत सहित सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक व विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. भाटिया,



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	31.03.2021	--	--

निकट भविष्य में सब्जियों की ग्राफिट तकनीक से बनी पौध उपलब्ध करवाएगा हकूमि

हिसार/31 मार्च/रिपोर्टर्

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय अब जल्द ही किसानों को सब्जियों की ग्राफिट तकनीक से तैयार पौध उपलब्ध करवाएगा। इसके लिए विश्वविद्यालय के सभी विज्ञान विभाग में कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने वैज्ञानिक ग्राफिटिंग यूनिट की आधारशिला रखी है। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि इससे बिना रसायन के प्रयोग से भी मृदा जनित बीमारियों व नेमाटोड (सूत्रकृषि) की समस्या से राहत मिलेगी। उन्होंने कहा कि इस यूनिट की स्थापना 175 लाख की राशि से राष्ट्रीय कृषि विकास योजना-रप्तार परियोजना के तहत की जाएगी जिसके बाद न केवल हरियाणा बल्कि देश में भी निकट भविष्य में ग्राफिटिंग तकनीक के अनुसंधान कार्य और व्यवसायीकरण को बढ़ावा मिलेगा। इस यूनिट के तहत ग्राफिटिंग करने के लिए हाइटेक ग्रीन हाउस सहित नौ ढांचों का निर्माण किया जाएगा। इस तकनीक के प्रचलन के साथ ही किसानों की आय को भी बढ़ाया जा सकेगा व सभी उत्पादकों को भी विशेष लाभ होगा। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों द्वारा प्रदेश में एक बार प्रतिरोधी रूटस्टॉक्स पहचान किए जाने

के बाद इससे न केवल कृषि रसायनों पर निर्भरता कम होगी, बल्कि इस तकनीक के साथ हमारे किसानों की प्रमुख समस्याओं का भी समाधान होगा। इसके लिए प्रदेश में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने रूटस्टॉक्स की पहचान के उद्देश्यों के साथ अनुसंधान कार्य शुरू कर दिए हैं, जिसके समरात्मक परिणाम सामने आ रहे हैं। उन्होंने बताया कि प्रदेश में संरक्षित खेती में निमटोड की समस्या, लवणता या क्षरियत की समस्या, कुकुर्बिंदिस और सॉलानसियस सब्जियों में पृथक्सैरियम या बैक्टीरियल विल्ट की समस्या आदि प्रमुख हैं। इसके साथ-साथ पौधे की शक्ति और उपज में वृद्धि के लिए भी प्रयास किये जा रहे हैं। इस प्रोजेक्ट की परियोजना अधिकारी डॉ. इंदू अरोड़ा के अनुसार ग्राफिटिंग एक अनूठी बागवानी तकनीक है जिसका उपयोग दुनियाभर में संरक्षित खेती में निमटोड व मिटटी से पैदा होने वाली बीमारियों को दूर करने के लिए या विभिन्न पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुसार पौधे की शक्ति बढ़ाने के लिए किया जाता है। वर्तमान समय में इसी महत्व बढ़ गई क्योंकि फसल चक्र या मिटटी के धूमन के विकल्प सीमित हैं।

इस परियोजना में विभागाध्यक्ष डॉ. एके भाटिया, पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. वीके बत्तरा और सहायक वैज्ञानिक डॉ. कुलदीप भी अनुसंधान कार्य में सहयोग कर रहे हैं। आधारशिला रखने के बाद विश्वविद्यालय के कुलपति व अन्य अधिकारियों ने सभी विज्ञान विभाग में ग्राफिटिंग तकनीक से तैयार किए गए पौधों, खेत में उगाइ गई ग्राफिट बीमारियों व अनुसंधान कार्यों का भी अवलोकन किया। सभी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एके भाटिया ने बताया कि सब्जियों में ग्राफिटिंग तकनीक से पौधे में रोगप्रतिरोधक क्षमता, नेमाटोड प्रतिरोधक क्षमता, उपज में वृद्धि, कम तापमान व उच्च तापमान के प्रति सहिष्णुता, उच्च नमक सहिष्णुता, बाढ़ सहिष्णुता, उन्नत पोषक तत्व का बढ़ावा, विकास को बढ़ावा देना, भारी धातु और जैविक प्रदूषक सहिष्णुता, गुणवत्ता में बदलाव, प्रदर्शनी और शिक्षा के लिए सजावटी मूल्य, विस्तारित फसल अवधि आदि के फायदे होंगे। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बीआर कंबोज, अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत सहित सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक व विभागाध्यक्ष मौजूद रहे।

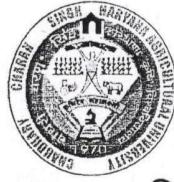


चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	31.03.2021	--	--

एथएयू अब किसानों को देगा ग्राफटि सज्जियों की पौध : प्रो. समर सिंह

हिसार, 31 मार्च (देवानंद): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय अब जल्द ही किसानों को सज्जियों की ग्राफटिंग तकनीक से तैयार पौध उपलब्ध करवाएगा। इसके लिए विश्वविद्यालय के सभी विज्ञान विभाग में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर ने वैजिटेबल ग्राफटिंग यूनिट की आधारशिला रखी है। इस अवसर पर वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए, उन्होंने कहा कि इससे बिना रसायन के प्रयोग से भी मृदा जनित बीमारियों व नेमाटोड (मूत्रकृमि)की समस्या से राहत मिलेगी। उन्होंने कहा कि इस यूनिट की स्थापना 175 लाख की राशि से राष्ट्रीय कृषि विकास योजना-स्फर परियोजना के तहत की जाएगी जिसके बाद न केवल हरियाणा बल्कि देश में भी निकट भवित्व में ग्राफटिंग तकनीक के अनुसंधान कार्य और व्यवसायीकरण को बढ़ावा मिलेगा। इस यूनिट के तहत ग्राफटिंग करने के लिए हाइटेक ग्रीन हाउस सहित नै ढांचों का निर्माण किया जाएगा। इस तकनीक के प्रचलन के साथ ही किसानों की आय को भी बढ़ाया जा सकेगा व सभी उत्पादकों को भी विशेष लाभ होगा। उन्होंने बताया कि प्रदेश में संरक्षित खेती में निमेटोड की समस्या, लवणता या क्षारियता की समस्या, कुकुर्बिट्स और सौंलानसियस सज्जियों में फ्यूसैरियम या बैक्टीरियल विल्ट की समस्या आदि प्रमुख हैं। इस परियोजना में विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. भाटिया, पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. वी.के. बत्रा और सहायक वैज्ञानिक डॉ. कुलदीप भी अनुसंधान कार्य में सहयोग कर रहे हैं। आधारशिला रखने के बाद विश्वविद्यालय के कुलपति व अन्य अधिकारियों ने सभी विज्ञान विभाग में ग्राफटिंग तकनीक से तैयार किए गए पौधों, खेत में आई गई ग्राफटिंग सज्जियों व अनुसंधान कार्यों का भी अवलोकन किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....लोक संपर्क २१/४८.....

दिनांक ।।। ५।। २०२१।।। पृष्ठ संख्या ।।। ५।।। कॉलम ।।। ५।।।

एचएयू में औषधीय पौधों को लेकर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित

भारतीय न्यूज | हिसार

एचएयू के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के औषधीय सुगंध एवं क्षमतावान फसल अनुभाग की ओर से अनुचित जाति के प्रतिभागियों के लिए बुधवार को एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण संस्थान के सह-निदेशक डॉ. अशोक कुमार गोदारा कार्यक्रम के मुख्यातिथि रहे। उन्होंने किसानों को प्रशिक्षण का समुचित लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया और कहा कि आज के कोरोना युग औषधीय पौधों का महत्व और अधिक बढ़ गया, क्योंकि ये हमारी इम्युनिटी पावर को बढ़ाते हैं। इसलिए कुछ जरूरी औषधीय पौधे हमें अपने घर आंगन, किचन गार्डन या गमलों में अवश्य लगाने चाहिए। अनुभाग के अध्यक्ष एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ. पवन कुमार ने किसानों को औषधीय पौधों द्वारा कृषि विनिधिकरण के महत्व को समझाया। तथा कृषि प्रणाली में औषधीय पौधों को सम्मलित करने का आह्वान किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक मासिक.....

दिनांक .1.5.2021....पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....4.....

एचएयू में वर्कशाप

फसल विविधिकरण के लिए औषधीय पौधे उगाएं

स्टीटी रिपोर्टर • एचएयू के अनुवांशिकी एवं पौधे प्रजनन विभाग के औषधीय सुगंध एवं क्षमतावान फसल अनुभाग की ओर से अनुसूचित जाति के प्रतिभागियों के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का आयोजन आईसीएआर, डीएमएपीआर, आनन्द के सहयोग से किया गया। सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण संस्थान के सह-निदेशक डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने कार्यक्रम में बतार मुख्यातिथि ने विभिन्न प्रशिक्षणों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि आज के कोरोना युग औषधीय पौधों का महत्व और अधिक बढ़ गया क्योंकि ये हमारी इन्युनिटी पावर को बढ़ाते हैं तथा रोगों के संक्रमण के खतरों को घटाते हैं। इसलिए कुछ जरूरी औषधीय पौधे हमें अपने घर आंगन, किचन गार्डन या गमलौ में अवश्य लगाने चाहिए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....ज्ञानालय.....

दिनांक १५.२.२१....पृष्ठ संख्या.....२..... कॉलम.....१-२.....

औषधीय पौधे उगाने की दी सलाह

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकुबि) के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के औषधीय सुर्गंध एवं क्षमतावान फसल अनुभाग की ओर से बुधवार को कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसका आयोजन आईसीएआर, डीएमएपीआर, आणंद के सहयोग से किया गया। सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण संस्थान के सह-निदेशक डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने किसानों को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित किए जाने वाले विभिन्न प्रशिक्षणों के बारे में जानकारी दी। ब्लूरो



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	31.03.2021	--	--

किसान प्रशिक्षण का समुचित लाभ उठाएँ : डॉ. गोदारा

हिसार/31 मार्च/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के औषधीय सुगंध एवं क्षमतावान फसल अनुभाग की ओर से अनुसूचित जाति के प्रतिभागियों के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का आयोजन आईसीएआर, डीएमएपीआर, आनन्द के सहयोग से किया गया। सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण संस्थान के सह निदेशक डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि किसानों को संबोधित करते हुए किसानों को प्रशिक्षण का समुचित लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया और कहा कि आज के कोरोना युग में औषधीय पौधों का महत्व और अधिक बढ़ गया क्योंकि ये हमारी इम्युनिटी पावर को बढ़ाते हैं तथा रोगों के संक्रमण के खतरों को घटाते हैं। इसलिए कुछ जरूरी औषधीय पौधे हमें अपने घर आंगन, किचन गार्डन या गमलों में अवश्य लगाने चाहिए। अनुभाग के अध्यक्ष एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ. पवन कुमार ने किसानों को औषधीय पौधों द्वारा कृषि विविधिकरण के महत्व को समझाया तथा कृषि प्रणाली में औषधीय पौधों को सम्मालित करने का आव्वान किया। उन्होंने कहा कि इससे किसानों की आमदनी में इजाफा हो सकता है। साथ ही उन्होंने अनुभाग की औषधीय वाटिका में उपलब्ध जड़ी-बुटियों व औषधीय पौधों की खेती संबंधी जानकारी के बारे में जानकारी दी। कार्यशाला का संचालन करते हुए डॉ. राजेश कुमार आर्य ने बताया कि इस कार्यशाला में विभिन्न गांवों के अनुसूचित जाति के 30 किसानों ने भाग लिया। प्रधान वैज्ञानिक डॉ. गजराज सिंह दहिया ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर डॉ. रवि कुमार बैनीवाल, डॉ. सोमबीर, डॉ. नरेन्द्र एवं डॉ. सुरेन्द्र व डॉ. झावरमल सुतलिया मौजूद रहे। कार्यक्रम के समापन अवसर पर सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र, किट, औषधीय/बागवानी की समग्र सिफारिशों की पुस्तकें, औषधीय पौधे/ कलम एवं लघु औजार वितरित किए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	31.03.2021	--	--

फसल विविधिकरण के लिए औषधीय पौधे लगाने की दी सलाह

एचएसू में औषधीय पौधों को लेकर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित



हिसार : प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र व अन्य सामग्री वितरित करते मुख्यालियति।

हिसार, 31 मार्च (राजकुमार) : सह-निदेशक डॉ. अशोक कुमार गोदारा चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के अनुबाधिको एवं पौध प्रजनन विभाग के औषधीय सुगंध एवं श्वसनात्मक फसल अनुभाग की ओर और से अनुसूचित जाति के प्रतिभागियों के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का आयोजन आईसीएआर, डोएपीआर, आनन्द के सहयोग से किया गया। सवना नेहवाल कृषि प्रैद्योगिकी प्रशिक्षण संस्थान के

इसलिए कुछ जरूरी औषधीय पौधे हमें अपने घर आंगन, किचन गार्डन या गम्लों में अवश्य लगाने चाहिए। अनुभाग के अध्यक्ष एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ. पवन कुमार ने किसानों को औषधीय पौधों द्वारा कृषि विविधिकरण के महत्व को समझाया तथा कृषि प्रणाली में औषधीय पौधों को सम्मति करने का आह्वान किया। उन्होंने बताय कि इस कार्यशाला में विभिन्न गांवों के अनुसूचित जाति के 30 किसानों ने भाग लिया। प्रधान वैज्ञानिक डॉ. गजराज सिंह दिल्ला ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर डॉ. रवि कुमार बैनीबाल, डॉ. सोमवीर, डॉ. नरेन्द्र एवं डॉ. सुरेन्द्र व डॉ. ज्ञावस्मल सुनालिया मौजूद रहे। कार्यक्रम के समापन अवसर पर सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र, किट, औषधीय बागवानी की समग्र सिफारिशों की पुस्तकें, औषधीय पौधे/कलम एवं लघु औजार वितरित किए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	31.03.2021	--	--

फसल विविधिकरण के लिए औषधीय पौधे उगाने की दी सलाह

पाठकपक्ष न्यूज़

हिसार, 31 मार्च : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के अनुबांशिकी एवं पौधे प्रजनन विभाग के औषधीय सुगंध एवं क्षमतावान फसल अनुभाग की ओर से अनुसूचित जाति के प्रतिभागियों के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का आयोजन आईसीएआर, डीएमएपीआर, आनन्द के सहयोग से किया गया। सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण संस्थान के सह-निदेशक डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि किसानों को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित किए जाने वाले विभिन्न प्रशिक्षणों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने किसानों को प्रशिक्षण का समुचित लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया और कहा कि आज के कोरोना युग औषधीय पौधों का महत्व और अधिक बढ़ गया क्योंकि ये हमारी इम्युनिटी पावर को बढ़ाते हैं तथा रोगों के संक्रमण के खतरों को घटाते हैं। इसलिए कुछ जरूरी औषधीय पौधे हमें अपने घर



अंगन, किंचन गार्डन या गमलों में अवश्य लगाने चाहिए। अनुभाग के अध्यक्ष एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ. पवन कुमार ने किसानों को औषधीय पौधों द्वारा कृषि विविधिकरण के महत्व को समझाया तथा कृषि प्रणाली में औषधीय पौधों को सम्मलित करने का आवान किया। उन्होंने कहा कि इससे किसानों की आमदनी में इजाफा हो सकत है। साथ ही उन्होंने अनुभाग की औषधीय वाटिका में उपलब्ध जड़ी-बुटियों व औषधीय पौधों की खेती संबंधी जानकारी के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। कार्यशाला का संचालन करते हुए डॉ. राजेश कुमार आर्य ने सभी

प्रतिभागियों व वक्ताओं का स्वागत किया। उन्होंने बताय कि इस कार्यशाला में विभिन्न गांवों के अनुसूचित जाति के 30 किसानों ने भाग लिया। प्रधान वैज्ञानिक डॉ. गजराज सिंह दहिया ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर डॉ. रवि कुमार बैनीवाल, डॉ. सोमबीर, डॉ. नरेन्द्र एवं डॉ. सुरेन्द्र व डॉ. झाबरमल सुतालिया मौजूद रहे। कार्यक्रम के समाप्त अवसर पर सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र, किट, औषधीय/बागवानी की समग्र सिफारिशों की पुस्तकें, औषधीय पौधे/कलम एवं लघु औजार वितरित किए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

२०२१ का मास कृषि

दिनांक .।.....५.२०२.....पृष्ठ संख्या.....५.....कॉलम.....।-३.....

सूरजमुखी की उन्नत किस्मों की बुवाई अप्रैल के पहले सप्ताह तक कर सकते हैं: विशेषज्ञ
**सूरजमुखी की उन्नत किस्म एचएसएफएच 848
उगाकर 22-25 विवंटल प्रति एकड़ फसल पाएं**

महावृत्त अली | हिसार

सूरजमुखी वनस्पति तेल के प्रमुख स्रोत के रूप में उगाई जाने वाली फसल है। इसकी 22-25 विवंटल प्रति एकड़ पैदावार पाने के लिए एचएयू के वैज्ञानिक सूरजमुखी की उन्नत किस्म एचएसएफएच 848 उगाने की सलाह दे रहे हैं। पछेती के रूप में इसकी बुवाई अप्रैल महीने के पहले सप्ताह कर सकते हैं। एचएयू के कुलपति प्रो. समर सिंह ने बताया कि सूरजमुखी तिलहनी फसल है। इस पर प्रकाश का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इसके बीज में तेल की मात्रा भी 40-50 % होती है। इसके तेल में लीनोलिक होते हैं जो कोलेस्ट्रोल नियंत्रित करते हैं। इसी गुणवत्ता के कारण इसके तेल का प्रयोग दिल की बिमारियों की दवा में होता है। कृषि विशेषज्ञ डॉ अनुराग के अनुसार, वैसे तो सूरजमुखी की बुवाई फरवरी के अंत व मार्च के पहले सप्ताह तक होती है मगर उन्नत किस्मों को अप्रैल के पहले सप्ताह तक बोया जा सकता है। कुलपति प्रो. समर सिंह ने बताया कि किसानों को गाली के साथ-साथ वेबिनार द्वारा भी सूरजमुखी की उन्नत किस्मों की जानकारी दी जा रही है।

जानिए... भूमि का चुनाव और खेत की तैयारी कैसे करें



एचएयू में उगी सूरजमुखी की उन्नत किस्म। (फाइल फोटो)

■ ये हैं सूरजमुखी की पछेती किस्में

एचएसएफएच 848 किस्म सूरजमुखी की अधिक पैदावार वाली संकर किस्म है। इसकी औसत पैदावार 22-25 विवंटल प्रति एकड़ है। पछेती किस्मों में एमएसएफएच 17, पीएसी 1091, सनजीन 85, प्रोसन 09 व एचएसएफएच 848 शामिल हैं।

■ बुवाई के लिए बीज की मात्रा

उन्नत किस्म का 4 किलो व संकर का 1-2 किलो बीज प्रति एकड़ पर्याप्त है। बीज 4-6 घंटे पहले भिगोएं व बिजाई से पहले छांव में सूखाएं। उन्नत किस्म को कतारों में 45 सेमी व संकर किस्म को 60 सेमी की दूरी पर बोएं। बीज को 3-5 सेमी की गहराई में बोएं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

नैटुरल बिल्डिंग

दिनांक ।।। ५।।। २०२।। पृष्ठ संख्या ।।। ५।।। कॉलम ।।। ७-८।।।

डॉ. कुशल राज बने भारतीय पौध रोग विशेषज्ञ संस्था के अध्यक्ष

हिसार (निस) चौथरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के पौध रोग विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक डॉ. कुशल राज को भारतीय पौध रोग विशेषज्ञ संस्था (उत्तरी क्षेत्र) का अध्यक्ष चुना गया है। जबकि डॉ. राकेश कुमार चूध को काउसलर चुना गया है। उवत जानकारी देते हुए डॉ. कुशल राज ने बताया कि इसकी घोषणा गत दिनों पौध स्वास्थ्य एवं खाद्य सुरक्षा को लेकर ऑनलाइन माध्यम से आयोजित राष्ट्रीय ई-कॉफ़िस में की गई। अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत, कृषि महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. छवा सिंह सहारण सहित विश्वविद्यालय के अन्य अधिकारियों व वैज्ञानिकों ने दोनों वैज्ञानिकों को घुम्भकामनाएं दी हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरियाणा वाटिका	31.03.2021	--	--

ग्रामीण महिलाओं को मुगीपालन व पशुपालन के माध्यम से दिया आर्थिक सशक्तिकरण का संदेश

सुभाष पंजार

वाटिका@हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के इंदिरा चक्रवर्ती गृह विज्ञान महाविद्यालय की ओर से गांव बुड़ाक में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन महिला सशक्तिकरण व लैंपिंग भेद मिटाने के लिए काँलेम में चल रही तीन वर्षीय परियोजना के तहत किया गया। यह परियोजना अनुसंधान निदेशक डॉ. एस. के. सहरावत के मार्गदर्शन में चल रही है। महाविद्यालय की अधिकारी डॉ. विमला ढांडा ने बताया कि इस परियोजना का संचालन महाविद्यालय के चार विभागों द्वारा संयुक्त रूप से किया जा रहा है। परियोजना की मुख्य अन्वेषक डॉ. कृष्णा दूहन ने बताया कि परियोजना के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में लिंग भेद कम करने हेतु मोडल विकासित करने के लिए बुड़ाक गांव को चुना गया है। उन्होंने बताया कि इसी के तहत गांव बुड़ाक में ग्रामीण महिलाओं के लिए आर्थिक सशक्तिकरण को लेकर कार्यक्रम



आयोजित किया गया जिसमें पशुपालन व मुगीपालन को लेकर जानकारी दी गई। लाला लालजतराय पशु चिकित्सा एवं विज्ञान विश्वविद्यालय से डॉ. अशोक भालिक ने ग्रामीणों को पशुपालन के माध्यम से आय बढ़ाने के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने किसान उत्पादक समूह के बारे में बताते हुए कहा कि इनके माध्यम से किसान दुध से बत्ती बफ्फे, दही, पीसीर, खोया आदि का व्यवसाय शुरू कर सकते हैं और अपनी आपदनी में इजाजा कर सकते हैं। इसके अलावा मुगीपालन के माध्यम से भी ग्रामीण आर्थिक रूप से सशक्त हो सकते हैं। उन्होंने ग्रामीणों को मुर्गियों की विभिन्न प्रजातियों व उनके रखबरखाव

को तकनीकों से अवगत कराया। पशुओं की विभिन्न बीमारियों से कारबाया अवगत : इसी प्रकार पशु चिकित्सक डॉ. गविंद ने पशुओं में होने वाली बीमारियों जैसे मुँह खुर, गल घोट आदि की जानकारी दी और उनसे नियान के उपाय बताए। साथ ही पशुओं की नस्ल सुधार के लिए गुणवत्ता, कृत्रिम गम्भार्यन के बारे में ग्रामीणों को जागरूक किया। इसके अलावा सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं जैसे पशु किसान क्रेडिट कार्ड, पशुपालन के लिए वित्तीय सहायता के बारे में भी विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई। परियोजना की मुख्य अन्वेषक डॉ. कृष्णा दूहन ने ग्रामीण महिलाओं से आह्वान किया कि वे आय उत्पादन के नए साधन अपनाएं ताकि वो आर्थिक रूप से आवृद्धिर्भर बनकर अपना व अपने परिवार का उत्थान कर सकें। कार्यक्रम के समाप्तन अवसर पर डॉ. निगम ने सभी उपस्थितजनों का धन्यवाद किया। कार्यक्रम के आयोजन में डॉ. निगम, डॉ. पूनम कुमारी तथा डॉ.